Avtar liyo nandlal nand bhawan badhai baaz rahi Lyrics in Hindi and English

Avtar liyo nandlal nand bhawan badhai baaz rahi Lyrics in Hindi

अवतार लियो नंदलाल,
नंद भवन बधाई बाज रही

नंदभवन में आनंद छाया है,
नंदघर नंदलाला आया है नंद हो गए मालामाल,
नंद भवन बधाई बाज रही

नभ देवता मंगलाचार करें,
ब्रजवासी जय जयकार करें रंग रस बरसे गुलाल,
नंद भवन बधाई बाज रही

बड़ा शोना श्याम सलोना है,
मनमोहन रूप खिलौना है बड़ा सुंदर लड्डू गोपाल,
नंद भवन बधाई बाज रही

हरि दरस “मधुप” हरि पावत है,
सब नाचत झूमत गावत है पलना झूलत ब्रजलाल,
नंद भवन बधाई बाज रही

Avtar liyo nandlal nand bhawan badhai baaz rahi Lyrics in English

Avataar liyo Nandlal,
Nand bhavan badhai baaj rahi.

Nandbhavan mein anand chhaya hai,
Nandghar Nandlala aaya hai, Nand ho gaye maalamaal,
Nand bhavan badhai baaj rahi.

Nabh devta mangalachar karen,
Brajwasi Jai Jai Kaar karen, rang ras barse gulaal,
Nand bhavan badhai baaj rahi.

Bada sona Shyam salona hai,
Manmohan roop khilona hai, bada sundar laddoo Gopal,
Nand bhavan badhai baaj rahi.

Hari darshan “Madhup” Hari paavat hai,
Sab naachat jhoomtat gaavat hai, palna jhoolat Brajlaal,
Nand bhavan badhai baaj rahi.

About Avtar liyo nandlal nand bhawan badhai baaz rahi Bhajan in English

“Avtar Liyo Nandlal, Nand Bhawan Badhai Baaj Rahi” is a vibrant and devotional bhajan that celebrates the divine birth of **Lord Krishna** in **Nand Baba’s house**. This bhajan highlights the joy and festivities surrounding Krishna’s birth, emphasizing the happiness that fills **Nand Bhawan** (Nand Baba’s home) and the entire **Braj** region. The music and rhythm symbolize the grandeur of Krishna’s arrival, as well as the blessings and divine joy that accompany it.

- **The Divine Birth of Krishna:** The bhajan begins with a declaration that **Lord Krishna** has incarnated as **Nandlal** in **Nand Bhawan**, and the celebrations are ringing loud and clear. “Avtar liyo Nandlal, Nand bhawan badhai baaj rahi” marks the joyous occasion of Krishna’s birth, bringing blessings and happiness to his family and to the people of **Braj**.
- **Joy and Prosperity in Nand Bhawan:** The bhajan emphasizes the happiness that has spread in **Nand Bhawan** with Krishna’s arrival. “Nandbhavan mein anand chhaya hai, Nandghar Nandlala aaya hai, Nand ho gaye maalamaal” highlights how Nand Baba’s home has

become a place of prosperity and divine joy with Krishna's birth. The family of Nand becomes spiritually and materially prosperous due to Krishna's divine presence.

- **Celestial Blessings and Universal Celebration:** The bhajan describes how even the **deities** of the heavens bless Krishna's birth, celebrating the event with festive rituals. "Nabh devta mangalachar karen, Brajwasi Jai Jai Kaar karen, rang ras barse gulaal" suggests that the celestial beings shower Krishna's birth with blessings, and the people of **Braj** rejoice with a festive spirit, celebrating with colors, music, and joy.
- **Krishna's Divine Beauty and Charm:** The bhajan also speaks of Krishna's captivating beauty, symbolizing his divine appeal that wins the hearts of everyone. "Bada sona Shyam salona hai, Manmohan roop khilona hai" describes Krishna's charming appearance, highlighting his divine form as **Shyam Sundar** (the dark-complexioned, beloved one), who captivates everyone with his beauty and innocence.
- **Divine Playfulness and the Joy of Braj:** The bhajan concludes by referring to Krishna's divine activities, including his playful antics and his loving care for his devotees. "Hari darshan 'Madhup' Hari paavat hai, Sab naachat jhoomtat gaavat hai, palna jhoolat Brajlaal" refers to Krishna's blessings and the joy he brings to Braj, with everyone dancing and singing in delight at his divine presence.

Overall, **"Avtar Liyo Nandlal, Nand Bhawan Badhai Baaj Rahi"** is a joyful celebration of Lord Krishna's birth. The bhajan captures the spirit of festivity and reverence, symbolizing how Krishna's arrival brings prosperity, peace, and divine blessings to all. It conveys the joy and excitement that surrounds his birth in **Nand Bhawan**, invoking divine love and devotion from the listeners.

About Avtar liyo nandlal nand bhawan badhai baaz rahi Bhajan in Hindi

"अवतार लियो नंदलाल, नंद भवन बधाई बाज रही" भजन के बारे में

"अवतार लियो नंदलाल, नंद भवन बधाई बाज रही" एक अत्यंत भक्ति और उल्लास से भरा भजन है जो **भगवान श्री कृष्ण** के **नंद बाबा के घर** जन्म लेने के दिव्य क्षण को मनाता है। इस भजन में कृष्ण के जन्म के बाद नंद भवन में फैलने वाली खुशियों, समृद्धि और भक्तों के आनंद का वर्णन किया गया है। यह भजन भगवान कृष्ण के आगमन के साथ जुड़े आशीर्वाद, हर्ष और उत्सव को दर्शाता है, जो **बृज** क्षेत्र में एक दिव्य उत्सव का रूप लेता है।

- **कृष्ण का दिव्य जन्म :** भजन की शुरुआत **भगवान श्री कृष्ण** के **नंदलाल** के रूप में जन्म लेने की घोषणा से होती है। "अवतार लियो नंदलाल, नंद भवन बधाई बाज रही" पंक्ति में कृष्ण के जन्म की खुशी को उत्सव के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो नंद बाबा के घर में अपार हर्ष और उल्लास का कारण बनता है।
- **नंद भवन में खुशियाँ और समृद्धि :** भजन में यह बताया गया है कि नंद भवन में कृष्ण के आगमन से आनंद और समृद्धि का माहौल बन गया है। "नंद भवन में आनंद छाया है, नंद घर नंदलाला आया है, नंद हो गए मालामाल" पंक्ति में यह दर्शाया गया है कि कृष्ण के जन्म से नंद बाबा का घर धन्य और समृद्ध हो गया है, और उनकी सभी कठिनाइयाँ समाप्त हो गई हैं।
- **आध्यात्मिक आशीर्वाद और देवताओं का उत्सव :** भजन में यह भी उल्लेख किया गया है कि कृष्ण के जन्म को देवता भी आशीर्वाद दे रहे हैं। "नभ देवता मंगलाचार करें, ब्रजवासी जय जयकार करें, रंग रस बरसे गुलाल" पंक्तियां यह दिखाती हैं कि कृष्ण के जन्म को आकाशीय देवता और ब्रजवासी एक साथ खुशी और उत्साह के साथ मना रहे हैं। देवता अपने आशीर्वाद और मंगलकामनाओं से कृष्ण के जन्म को और भी पवित्र बना रहे हैं।
- **कृष्ण की सुंदरता और आकर्षण :** भजन में कृष्ण की दिव्य सुंदरता का भी वर्णन किया गया है, जो उनके रूप और आकर्षण को दर्शाता है। "बड़ा शोना श्याम सलोना है, मनमोहन रूप खिलौना है" पंक्तियां कृष्ण के रूप की सुंदरता और आकर्षण को व्यक्त करती हैं, जो हर किसी के दिल को छूने वाला है।
- **कृष्ण की दिव्य लीलाएं और ब्रजवासियों का आनंद :** भजन में कृष्ण की दिव्य लीलाओं का भी उल्लेख किया गया है, जैसे कि उनका पालने में झूलना और उनकी उपस्थिति से ब्रजवासियों का आनंदित होना। "हरी दर्शन 'मधुप' हरी पावत है, सब नाचत झूमत गावत है, पलना झूलत ब्रजलाल" पंक्ति में यह दर्शाया गया है कि कृष्ण के दर्शन से ब्रजवासियों का हर्ष और उल्लास दोगुना हो जाता है, और सब उनके प्रेम में झूम उठते हैं।

कुल मिलाकर, "अवतार लियो नंदलाल, नंद भवन बधाई बाज रही" भजन भगवान श्री कृष्ण के जन्म का एक उल्लासपूर्ण उत्सव है। यह भजन नंद भवन में फैले दिव्य आनंद और समृद्धि

को व्यक्त करता है, साथ ही कृष्ण के रूप में भगवान की उपस्थिति से जो आनंद और शांति आती है, उसे श्रद्धा से मनाने का एक तरीका है। यह भजन भक्तों को कृष्ण की दिव्य लीलाओं में खो जाने और उनके साथ अपने जीवन को जोड़ने की प्रेरणा देता है।